IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवत गीता में अंतनिर्हित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

निर्देशिका

डॉ. भारती शर्मा

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

प्रस्तुतकर्त्री

निशा अग्रवाल

(एम एड छात्रा)

सारांश –

जीवन के वास्तविक अनुभवों एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए "श्रीमद्भागवत गीता" में वर्णित "श्री हरि कृष्ण" के दिये गए उपदेशों को समाहित किया गया है। वर्तमान समय में सभी ने कोरोना महामारी जैसी समस्या का सामना किया जिसमें शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक समस्यायें जैसे पढ़ाई में मन नहीं लगना, लक्ष्य का निर्धारण नहीं हो पाना, आदि समस्याओं के समाधान हेतू शोधार्थी ने वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवत गीता में अंतनिर्हित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन का चुनाव किया। जिसमें प्रत्येक अध्याय से शैक्षिक मूल्यों का चुनाव किया गया व उन्हें वर्तमान परिस्थिति से जोड़ते हुए एक मूल्य प्रत्यक्षीकरण मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली सरल भाषा में तैयार करके विद्यार्थियों से मूल्य चुनाव करने को कहा। जिसे पढ़कर विद्यार्थियों को शैक्षिक समस्याओं का समाधान मिला। जैसे – एकाग्रता, लक्ष्य के निर्धारण की आवश्यकता, भविष्य संचेता आदि। शोध अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भागवत गीता में अन्तनिर्हित शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन सार्थक सिद्ध हुआ।

प्रस्तावना –

श्रीमद्भागवत गीता महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है। श्रीमद्भागवत गीता का दिव्य ज्ञान महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अपने सखा (दोस्त) कुंती पुत्र अर्जुन को सुनाया था जब अुर्जन महाभारत के युद्ध में विचलित होकर अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे थे क्योंकि वे अपने ही लोगों से युद्ध करना नहीं चाहते थे। धर्म ग्रंथ के आंकडों के अनुसार भगवत गीता का उपदेश भगवान श्री कृष्ण ने अुर्जन को आज से लगभग 7000 वर्ष पूर्व दिया था। इसकी खासियत यह है कि यह दिव्य ज्ञान आज के दिन में भी उतना ही प्रासंगिक और उपयोगी है जितना पूर्व में था और तब तक

प्रासंगिक रहेगा जब तक धरती पर मानव जीवन का अस्तित्व रहेगा।

भगवान श्री कृष्ण ने अुर्जन को गीता का दिव्य ज्ञान कुरूक्षेत्र की रूणभूमि में रविवार के दिन सुनाया था और उस दिन एकादशी थी इसलिए हमारे हिंदू धर्म में एकादशी का इतना महत्व है। धर्म ग्रंथों के अनुसार गीता उपदेश कृष्ण द्वारा अर्जुन को लगभग 45 मिनट में सुनाया गया था और भगवान ने गीता का ज्ञान कर्तव्य से भटके हुए अर्जुन को कर्तव्य सिखाने के लिए और आने वाली पीढ़ियों को धर्म ज्ञान सिखाने के लिए दिया था ताकि धरती पर आने वाली पीढ़ियां अर्जुन की ही तरह अपने कर्तव्य पथ से ना हटे सदा धर्म के मार्ग पर चलें, धर्म का साथ दें।

''श्रीमदभागवत गीता में कुल 18 अध्याय और 700 श्लोक है जो इन्ही 18 अध्यायों में वर्णित है।''

''श्रीमद भागवत गीता का दूसरा नाम गीता उपनिषद भी है।''

वर्तमान परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में –

इसी प्रकार वर्तमान के समय में श्री श्रीमद्भागवत की कुछ विशेषताएँ निम्न है–

- कोरोना संक्रमण में भय और सुरक्षा से विचलित हुए मन के कल्याण में गीता मददगार रही है।
- मानसिक शांति के लिए गीता का उपयोग हुआ है।
- गीता जीवन के लिए अनिवार्य है।
- गीता के महामंत्र मुश्किलों से उबारने वाले है।

मूल्य –

मूल्य मनुष्य के व्यवहार को नियंत्रित, निर्देशित एवं प्रदर्शित करने वाले तत्व होते है। इन सभी मूल्यों में हम नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य, शैक्षिक मूल्य आदि ले सकते है। शोधकर्त्री द्वारा इस लघु शोध हेतु शैक्षिक मूल्यों का चुनाव किया गया है।

शैक्षिक मूल्यों के संदर्भ में –

गीता में शिक्षा को ज्ञान के अर्थ में ग्रहण किया गया है। श्रीमद् भगवत गीता के अनुसार शिक्षा जन्म जन्मांतर तक चलने वाली प्रक्रिया है। गीता के अनुसार शिक्षा वह है जो व्यक्ति में निहित परमात्मा की अनुभूति कराने में सहायक है। जैसे – कर्म के प्रति आसक्ति, शिक्षक शिक्षार्थी संबंध, पाठ्यचर्या, सद्गुणों का विकास, विश्वास आदि।

समस्या का औचित्य –

शिक्षा का अर्थ ही मूल्यों का विकास करना होता है। वर्तमान समय कोविड–19 के समय में श्रीमद्भागवत में कुछ शैक्षिक मूल्यों की आवश्यकता महसूस हुई है जिससे कोविड–19 के समय में भी शिक्षा के स्तर को उच्च रखा जा सके। संपूर्ण विश्व को इस बात पर विचार करना होगा कि किस प्रकार गीता के शैक्षिक मूल्य जैसे–कर्म योग, पाठ्यचर्या, दृष्टिकोण आदि को वर्तमान समय में अपनाकर सुख और समृद्धि की ओर अग्रसर कर सके।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

1. **श्रीमद्भगवतगीता** – यह एक ऐसा धार्मिक ग्रंथ है जो प्रत्येक समस्या के निवारण को समाहित करता है व श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए दिशानिर्देश का ग्रंथ व सार है।
2. **वर्तमान परिप्रेक्ष्य या परिस्थिति** – कोविड–19 के संदर्भ में।
3. **शैक्षिक मूल्य** – ऐसे मूल्य जो शिक्षा से संबंधित हो वह शिक्षा के लिए आवश्यक हो शैक्षिक मूल्य कहलाते है।

शोध के उद्देश्य –

1. गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन।
2. गीता में निहितार्थ शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिस्थितियों में समीक्षात्मक अध्ययन।

शोध की विधि –

किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए शोधार्थी का प्रमुख उद्देश्य समस्या का हल ढूंढना है। वर्तमान समय में शोध कार्य हेतु अनेक शोध विधियों का अध्ययन हेतु किया सकता है। शोधार्थी ने अपना शोध कार्य शिक्षा मूल्यों से संबंधित विषय वस्तु को अपनाया है। इस कारण सर्वमान्य विधि विषय वस्तु विश्लेषण विधि व सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोधार्थी द्वारा किया गया।

जनसंख्या –

श्रीमद भगवत गीता दर्शन।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

श्रीमद्भगवत गीता – हिंदी टीका सहित (गीता प्रेस गोरखपुर) एवं श्रीमद्भगवत गीता, यथार्थ गीता (श्री परमहंस स्वामी अड़गड़आनन्दजी आश्रम ट्रस्ट)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है +'

1. मूल्य प्रत्यक्षीकरण मापनी।
2. स्वयं निर्मित प्रश्नावली।

शोध का परीसीमांकन –

1. प्रस्तुत शोध में श्रीमद्भगवतगीता को केवल शैक्षिक मूल्य तक ही सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध गीता में निहित शैक्षिक निहितार्थ के अध्ययन तक ही सीमित रहा।
3. प्रस्तुत शोध गीता में प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिस्थितियों में समीक्षात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहा।

आँकड़ों का विश्लेषण –

उपुर्यक्त आँकड़े मूल्य प्रत्यक्षीकरण मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा प्राप्त किये गये है। यह मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली 18 अध्यायों में वर्णित कुल 30 प्रश्नों द्वारा निर्मित है। जिसमें कुल 25 शैक्षिक मूल्य हैं लेकिन सर्वाधिक संख्या में चुने जाने वाले मूल्यों के आँकड़े उपर्युक्त चार्ट में दशोये गये है।

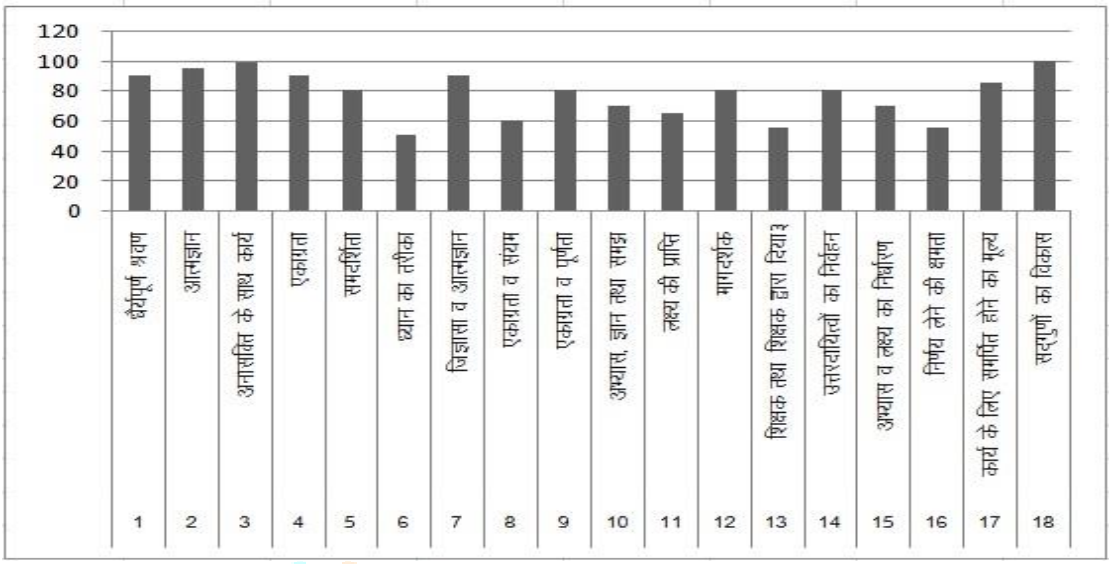

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. शोध को श्रीमद्भगवत् गीता के अन्य मूल्यों (नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य) पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में 100 छात्रों पर किया गया है। जिसे बड़े न्यादर्श में भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किया गया है। इसे पूर्व और भविष्य परिप्रेक्ष्य में भी किया जा सकता है।

शोध निष्कर्ष – श्रीभद्भगवत गीता में अन्तर्निहित शैक्षिक मूल्यों के समीक्षात्मक अध्ययन से वर्तमान परिस्थिति में विशेष रूप से शिक्षा के पथ पर वापस से अग्रसर होने में शैक्षिक मूल्यों को जो कि गीता के समीक्षात्मक अध्ययन से प्राप्त हुए थे वे कारगार सिद्ध हुए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. श्री नारायण पब्लिकेशन 1 जनवरी 2021, साधारण भाषाटीकासहित श्रीमद्भगवद् गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. शिव गंगा, 1 जनवरी 2017, श्रीमद्भगवत गीता महात्म्यसहित, विशिष्ट संस्करण।
3- https://youtu.be/28sptQICKCk
4- https://youtu.be/n74e8NVCMCI
5. बियानी, डॉ. संजय, श्रीमद्भगवत गीता... संजय की नजर से